

अखलाक पुं. (अर.) (खल्क का बहु.) 1. सदाचार, शिष्टाचार, उत्तम आचरण 2. आदत, ढंग 3. शील, शिष्टता 4. नीति।

अखाड़ची पुं. (तद्.) 1. (अखाड़े/व्यायामशाला का) कसरती पहलवान 2. अखाड़ेबाज व्यक्ति 3. ला.अर्थ शास्त्रार्थ/वाद-विवाद में आदि में निपुण व्यक्ति।

अखाड़ा पुं. (तद्.) 1. कुश्ती लड़ने या कसरत करने का स्थान, व्यायामशाला 2. साधुओं के रहने का स्थान, मठ या, संप्रदाय-विशेष के (नागा) साधुओं की मंडली।

अखाड़िया वि./पुं. (तद्.) 1. कुश्ती लड़ने वाला (पहलवान) 2. अपने चहेतों को जमाकर अपनी बात जमानेवाला (व्यक्ति) 3. दलगत राजनीति करने में निपुण (राजनेता)।

अखाड़ेबाज वि. (तद्.) 1. कुश्तियाँ लड़ने/पहलवानी करने का शौकीन 2. अपनी मित्र मंडली के साथ रहने की प्रवृत्ति वाला 3. दलीय संघर्ष में रुचि रखने वाला 4. तर्क वितर्क, बहस या प्रतिद्वन्द्विता करने वाला।

अखाड़ेबाजी स्त्री. (तद्.) 1. कुश्तियाँ लड़ने का शौक 2. मित्रों के साथ मौज मस्ती करना। 3. गुटबाजी।

अखात वि. (तद्.) जो खोदा न गया हो पुं. 1. प्राकृतिक जलाशय, झील 2. तीन ओर से घिरा हुआ समुद्र का भाग, खाड़ी 3. किसी मंदिर के सामने की पुष्करिणी।

अखाद्य वि. (तद्.) न खाने योग्य, अखाद्य, अभक्ष्य।

अखिन्न वि. (तद्.) अक्लांत, खेदरहित, क्लेशरहित, प्रसन्न।

अखिल वि. (तद्.) 1. संपूर्ण, समग्र, पूरा, निखिल, सार्व जैसे- अखिल भारतीय सम्मेलन 2. अखंड, समूचा।

अखिल भारतीय सेवाएँ स्त्री. (तद्.) संघ लोक सेवा आयोग अथवा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा

ली जाने वाली परीक्षाओं के माध्यम से भरा जाने वाला देशभर की प्रशासनिक, पुलिस, राजस्व आदि से संबंधित सेवाओं का संवर्ग।

अखिलात्मा स्त्री. (तद्.) 1. समस्त जगत् में व्याप्त आत्मा, विश्वात्मा, विश्वव्यापी चैतन्य 2. परमात्मा

अखिलेश पुं. (तद्.) संपूर्ण सृष्टि का स्वामी, ईश्वर, परमात्मा।

अखिलेश्वर पुं. (तद्.) संपूर्ण सृष्टि का स्वामी, ईश्वर, परमात्मा।

अखीर पुं. (अर.) 1. अंत, समाप्ति 2. किनारा 3. मृत्यु का समय।

अखुटना अ.क्रि. (देश.) खत्म न होना, निरंतरता होना, सातत्य बने रहना।

अखूट वि. (तद्.) जो खुटे नहीं, अर्थात् समाप्त न हो, अक्षय।

अखेद पुं. (तद्.) दुःख का अभाव, प्रसन्नता।

अखोट वि. (तद्.) बहुत ज्यादा, अधिकतम।

अखोटा पुं. (देश.) एक प्रकार का आभूषण जो स्त्रियाँ कान में पहनती हैं।

अखोह पुं. (तद्.) ऊँची-नीची भूमि, असमतल भूमि।

अख्खाह अव्य. (फा) किसी की प्रशंसा में प्रसन्नता या आश्चर्य व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द, वाह खूब।

अख्तयार पुं. (अर.) दे. इख्तियार।

अख्यात वि. (तद्.) जो ख्यात या कहा न गया हो। अनुक्त। अप्रसिद्ध।

अख्याति स्त्री. (तद्.) 1. अप्रसिद्धि, प्रसिद्धि का अभाव 2. अपकीर्ति, बदनामी।

अखलाक पुं. (अर.) सद्व्यवहार, सज्जनों का या सभ्यों का आचरण।

अग वि. (तद्.) जो चलने वाला न हो, स्थिर पुं. 1. पहाड़ 2. वृक्ष 3. दिनकर।

अगंध वि. (तद्.) गंधरहित, गंधहीन।